समास

जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बीच का कोई शब्द, शब्दांश या कारक लुप्त हो जाता है तब उसे समास कहते हैं।

जैसे-

1. राजा का पुत्र – राजपुत्र
2. रात ही रात में – रातोंरात
3. रसोईघर - रसोई के लिए घर
4. नीलगाय - नीले रंग की गाय

❖ इस मेल से जो शब्द बनता है उसे समस्त पद कहते हैं। समस्त पद में पहला पद, पूर्व पद तथा दूसरा पद, उत्तर पद कहलाता है।

LIVEWORKSHEETS

समास के छः भेद

1. अव्ययी भाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुव्रीहि समास

LIVEWORKSHEETS

1. अव्ययी भाव समास-

इन सभी शब्दों में पूर्वपद में अ, बे, ब,नि आदि अव्ययों का प्रयोग किया गया है जो कि अव्यय हैं। ... हम यह भी जानते हैं कि जब **समास** में पहला या पूर्वपद अव्यय **होता** है और उसका अर्थ प्रधान **होता** है। अव्यय के संयोग से समस्तपद भी अव्यय बन जाता है। इसमें पूर्वपद प्रधान **होता** है तब वह **अव्ययीभाव समास** होता है।

जिस समस्त पद में पूर्व पद (अव्यय हो) प्रधान हो तथा संपूर्ण पद क्रिया विशेषण हो, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।
जैसे –

यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
आमरण - मरण तक
भरपेट - पेट भरकर
रातोंरात - रात ही रात में
आजीवन - जीवन भर
आजन्म - जन्म भर
घड़ी-घड़ी - हर घड़ी

LIVEWORKSHEETS

अव्ययीभाव समास के कुछ अन्य उदाहरण :

- निस्संदेह : बिना संदेह के
- बेशक : बिना शक के
- बेनाम : बिना नाम के
- बेकाम : बिना काम के
- बेलगाम : लगाम के बिना
- भरपेट : पेट भर कर
- भरपूर : पूरा भर के
- रातभर : पूरी रात
- दिनभर : पूरे दिन
- रातोंरात : रात ही रात में
- हाथोंहाथ : एक हाथ से दुसरे हाथ में
- घड़ी-घड़ी :हर घड़ी
- साफ़-साफ़ : बिलकुल स्पष्ट
- आजन्म: जन्म से लेकर
- यथामति : मति के अनुसार
- प्रतिदिन : दिन-दिन
- यथाशक्ति : शक्ति के अनुसार
- अनजाने : बिना जाने
- घर-घर : प्रत्येक घर
- निस्संदेह : संदेह रहित
- प्रत्यक्ष : आँखों के सामने
- बेखटके : बिना खटके
- यथासमय : समय के अनुसार
- यथारुचि : रूचि के अनुसार
- प्रतिवर्ष : प्रत्येक वर्ष
- प्रतिसप्ताह : प्रत्येक सप्ताह
- यथाक्रम : क्रम के अनुसार
- यथानाम : नाम के अनुसार
- प्रत्येक : हर एक
- आजीवन : जीवन भर
- आमरण : मृत्यु तक
- प्रतिपल : पल-पल
- निडर : बिना डर के
- अकारण : बिना कारण के
- धड़ाधड़ : जल्दी से
- बेरहम : बिना रहम के रूचि के अनुसार
- बकायदा : कायदे के साथ
- बेकाम : बिना काम का
- अध्यात्म : आत्मा से सम्बंधित

LIVEWORKSHEETS

2. तत्पुरुष समास-

जिस सामासिक पद में उत्तर पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें प्रायः कारक चिह्नों का लोप होता है । जैसे –

स्वर्गप्राप्त	- स्वर्ग को प्राप्त
भूमिगत	- भूमि को गत
तुलसीरचित	- तुलसी द्वारा रचित
राहखर्च	- राह के लिए खर्च
देशनिकाला	- देश से निकाला
राजकन्या	- राजा की कन्या
रसोईघर	- रसोई के लिए घर
घुड़सवार	- घोड़े पर सवार
राष्ट्रपति	- राष्ट्र का पति
सिरदर्द	- सिर में दर्द

LIVEWORKSHEETS

कारक	चिह्न
कर्ता	ने- कौन, किसने
कर्म	को (क्या,किसको)
करण	से, द्वारा (By, with)- किससे
सम्प्रदान	को,के लिए (For, giving)- किसके लिए
अपादान	से (अलग होना) (From,than)- किससे
सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे (Relation) – किसका, किसकी
अधिकरण	में,पर – किसमें, किसपर

LIVEWORKSHEETS

कारक – चिह्न/परसर्ग / विभक्ति

1. कर्ता कारक – ने **(कौन, किसने)**
2. कर्म कारक – को **(क्या,किसको)**
3. करण कारक – **से, द्वारा - किससे (By, with)**
4. सम्प्रदान कारक – **को,के लिए - किसके लिए (For, giving)**
5. अपादान कारक – **से (अलग होना) – किससे (From, than)**
6. संबंध कारक – **का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे – किसका, किसकी (Relation)**
7. अधिकरण कारक – **में,पर – किसमें, किसपर**
8. संबोधन कारक – हे, हो, अरे

LIVEWORKSHEETS

तत्पुरुष समास की परिभाषा-
तत्पुरुष समास वह होता है, जिसमें उत्तरपद प्रधान होता है, अर्थात प्रथम पद गौण होता है एवं उत्तर पद की प्रधानता होती है व समास करते वक़्त बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है।

इस समास में आने वाले कारक चिन्हों को, से, के लिए, से, का/के/की, में, पर आदि का लोप होता है।

•मूर्ति को बनाने वाला — मूर्तिकार
•काल को जीतने वाला — कालजयी
•राजा को धोखा देने वाला — राजद्रोही
•खुद को मारने वाला — आत्मघाती
•मांस को खाने वाला — मांसाहारी
•शाक को खाने वाला — शाकाहारी
•ग्रामगत : ग्राम **को** गया हुआ।
•यशप्राप्त : यश **को** प्राप्त।
•स्वर्गगत : स्वर्ग **को** गया हुआ।
•ग्रंथकार : ग्रन्थ **को** लिखने वाला।
•माखनचोर : माखन **को** चुराने वाला।
•सम्मानप्राप्त : सम्मान **को** प्राप्त
•परलोकगमन : परलोक **को** गमन।
•शरणागत : शरण **को** आया हुआ।
•आशातीत : आशा **को** लाँघकर गया हुआ।
•सिरतोड़ : सिर **को** तोड़ने वाला।
•गगनचुम्बी : गगन **को** चूमने वाला।
•रथचालक : रथ **को** चलाने वाला।
•जेबकतरा : जेब **को** कतरने वाला।
•करुणापूर्ण : करुणा **से** पूर्ण
•शोकाकुल : शौक **से** आकुल
•वाल्मीकिरचित : वाल्मीकि **द्वारा** रचित
•शोकातुर : शोक **से** आतुर
•कष्टसाध्य : कष्ट **से** साध्य
•मनमाना : मन **से** माना हुआ
•शराहत : शर **से** आहत

•अकालपीड़ित : अकाल **से** पीड़ित
•भुखमरा : भूख **से** मरा
•सूररचित : सूर **द्वारा** रचित
•आचार्कुशल : आचार **से** कुशल
•मनचाहा : मन **से** चाहा
•रसभरा : रस **से** भरा
•प्रयोगशाला : प्रयोग **के लिए** शाला
•डाकगाड़ी : डाक **के लिए** गाड़ी
•रसोईघर : रसोई **के लिए** घर
•यज्ञशाला : यज्ञ **के लिए** शाला
•देशार्पण : देश **के लिए** अर्पण
•गौशाला : गायों **के लिए** शाला
•सत्याग्रह : सत्य **के लिए** आग्रह
•पाठशाला : पाठ **के लिए** शाला
•देशभक्ति : देश **के लिए** भक्ति
•विद्यालय : विद्या **के लिए** आलय
•हथकड़ी : हाथ **के लिए** कड़ी
•सभाभवन : सभा **के लिए** भवन
•लोकहितकारी : लोक **के लिए** हितकारी
•देवालय : देव **के लिए** आलय
•राहखर्च : राह ऋणमुक्त : ऋण **से** मुक्त
•धनहीन : धन **से** हीन
•गुणहीन : गुण **से** हीन
•विद्यारहित : विद्या **से** रहित
•पथभ्रष्ट : पथ **से** भ्रष्ट
•जीवनमुक्त : जीवन **से** मुक्त
•रोगमुक्त : रोग **से** मुक्त
•बंधनमुक्त : बंधन **से** मुक्त
•दूरागत : दूर **से** आगत
•जन्मांध : जन्म **से** अँधा
•नेत्रहीन : नेत्र **से** हीन
•**के लिए** खर्च
•पापमुक्त : पाप **से** मुक्त
•जलहीन : जल **से** हीन

•भूदान : भू **का** दान
•राष्ट्रगौरव : राष्ट्र **का** गौरव
•राजसभा : राजा **की** सभा
•जलधारा : जल **की** धारा
•भारतरत्न : भारत **का** रत्न
•पुष्पवर्षा : पुष्पों **की** वर्षा
•उद्योगपति : उद्योग **का** पति
•पराधीन : दूसरों **के** आधीन
•सेनापति : सेना **का** पति
•राजदरबार : राजा **का** दरबार
•देशरक्षा : देश **की** रक्षा
•गृहस्वामी : गृह **का** स्वामी
गृहप्रवेश : गृह में प्रवेश
पर्वतारोहण : पर्वत पर आरोहण
ग्रामवास : ग्राम में वास
आपबीती : आप पर बीती
जलसमाधि : जल में समाधि
जलज : जल में जन्मा
नीतिकुशल : नीति में कुशल
नरोत्तम : नारों में उत्तम
गृहप्रवेश : गृह में प्रवेश

LIVEWORKSHEETS

•सत्य के लिए आग्रह
•पथ से भ्रष्ट
•रोग से मुक्त
•विद्या के लिए आलय
•देश के लिए भक्ति
•बिना रहम के
•रूचि के अनुसार

LIVEWORKSHEETS

समास विग्रह कीजिए-
•अकालपीड़ित : अकाल **से** पीड़ित
•भुखमरा : भूख **से** मरा
•सूररचित : सूर **द्वारा** रचित
•रसभरा : रस **से** भरा
•मनचाहा : मन **से** चाहा
•प्रयोगशाला : प्रयोग **के लिए** शाला
•डाकगाड़ी : डाक **के लिए** गाडी
•रसोईघर : रसोई **के लिए** घर
•यज्ञशाला : यज्ञ **के लिए** शाला
•देशार्पण : देश **के लिए** अर्पण
•गौशाला : गौ **के लिए** शाला
•सत्याग्रह : सत्य **के लिए** आग्रह
•पाठशाला : पाठ **के लिए** शाला
•देशभक्ति : देश **के लिए** भक्ति
•विद्यालय : विद्या **के लिए** आलय

समस्त पद बनाइए-
•हथकड़ी : हाथ **के लिए** कड़ी
•सभाभवन : सभा **के लिए** भवन
•देवालय : देव **के लिए** आलय
•राहखर्च : राह **के लिए** खर्च
•ऋणमुक्त : ऋण **से** मुक्त
•धनहीन : धन **से** हीन
•गुणहीन : गुण **से** हीन
•विद्यारहित : विद्या **से** रहित
•पथभ्रष्ट : पथ **से** भ्रष्ट
•जीवनमुक्त : जीवन **से** मुक्त
•रोगमुक्त : रोग **से** मुक्त
•बंधनमुक्त : बंधन **से** मुक्त
•जन्मांध : जन्म **से** अँधा
•नेत्रहीन : नेत्र **से** हीन
•पापमुक्त : पाप **से** मुक्त
•जलहीन : जल **से** हीन

LIVEWORKSHEETS

3. कर्मधारय समास-

जिस समासिक पद में दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
वाक्य के विभाजन करते समय दोनों पदों के बीच में **"के समान, है जो, रूपी"** इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे –

विशेषण-विशेष्य

नीलगाय	- नीली है गाय जो
पीतांबर	- पीत है (पीला) अंबर जो
महात्मा	- महान है आत्मा जो
कालीमिर्च	- काली है जो मिर्च
कुपुत्र	- बुरा है पुत्र जो

उपमान (जिससे तुलना) – उपमेय (जिसकी तुलना)

विद्याधन	- विद्या रूपी धन
स्त्रीरत्न	- स्त्री रूपी रत्न
देहलता	- देह रूपी लता
भवसागर	- भव (संसार) रूपी सागर

LIVEWORKSHEETS

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण
सज्जन: सत्य है जो जन
नीलगाय: नीली है जो गाय
भुजदंड: दंड के समान पूजा
भुजबंद: भुज है जो बंद
प्राण प्रिय: प्राणों के समान प्रिय
ज्ञान धन: ज्ञान रूपी धन
मृगतृष्णा: मृग रूपी तृष्णा
पुत्र रतन: पुत्र रूपी रतन
भवजल: भव रूपी जल
कृष्णसर्प: कृष्ण है जो सर्प
ऊपर बताए गए सभी उदाहरण कर्मधारय समास के मुख्य उदाहरण है। क्योंकि इन उदाहरण में उपमेय और उपमान के बीच में संबंध नजर आता है।
•कीर्ति लता: कीर्ति **रूपी** लता।
•बिरहा सागर: बिरहा **रूपी** सागर।
•पर्णकुटी: पत्तों **के समान** कुटी।
•भक्ति सुधा: भक्ति **रूपी** सुधा।
•पुरुष रतन: पुरुष **रूपी** रतन।
उदाहरण के रूप में ऊपर जो भाग कर दिए गए हैं, इन वाक्य में देख सकते हैं कि पूर्व पद एवं उत्तर पद ने विशेषण एवं विशेष्य की होने का संबंध पता चल रहा है।

नव युवा: नव है जो युवा।
नीलकमल: नीला है जो कमल।
देहलता: देह रूपी लता।
ऊपर जो उदाहरण दर्शाए गए हैं, उन वाक्य में पूर्व पद और उत्तर पद जिनमें विशेषण और विशेष्य होने का संबंध हो रहा है और दोनों पदों में उपमेय और उपमान का संबंध भी दिखाई दे रहा है।
•नील कमल: नील **के समान** कमल।
•सूरजमुख: सूरज **के समान** मुख।
•महारत्न: महान **है जो** रत्न।
•प्रधानाध्यापक: प्रधान **है जो** अध्यापक।
•महाराज: महान **है जो** राजा।
पूर्व पद और उत्तर पद में विशेषण और विशेष्य के साथ-साथ उपमान और उसमें का संबंध भी देखने को नजर आ रहा है।
•पीलामणि: पीला **है जो** मणि।
•पीतांबर: पीत **है जो** अंबर।
•महात्मा: महान **है जो** आत्मा।
•महाराज: महान **है जो** राजा।
ऊपर उदाहरण दर्शाए गए हैं, इन उदाहरण में पूर्व पद में उत्तर पद की विशेषता बताई जा रही है और दोनों पदों में उपमेय और उपमान में संबंध भी दिखाई दे रहा है।

LIVEWORKSHEETS

•कर्मधारय समास के उदाहरण :

•पीताम्बर =पीत है जो अम्बर
•महात्मा =महान है जो आत्मा
•लालमणि = लाल है जो मणि
•महादेव = महान है जो देव
•विरहसागर : विरह रुपी सागर
•पर्णकुटी : पत्तों से बनी कुटी
•चलसम्पति : गतिशील संपत्ति
•भवजल : भव(संसार) रुपी जल
•कीर्तिलता : कीर्ति रुपी लता
•भक्तिसुधा : भक्ति रुपी सुधा
•मुखारविंद : अरविन्द के सामान मुख
•पुत्ररत्न : रत्न के सामान पुत्र
•चरणकमल = कमल के समान चरण
•चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख
•अधपका – आधा है जो पका
•महाराज – महान है जो राजा
•महावीर – महान है जो वीर
•महापुरुष – महान है जो पुरुष
•प्रधानाध्यापक – प्रधान है जो अध्यापक
•कापुरुष – कायर है जो पुरुष

LIVEWORKSHEETS

कर्मधारय समास के कुछ अन्य उदाहरण :

•कृष्णसर्प = कृष्ण है जो सर्प
•सज्जन = सत है जो जन
•नीलगाय = नीली है जो गाय
•शुभागमन = शुभ है जो आगमन
•कनकलता = कनक के समान लता
•प्राणप्रिय = प्राणों के सामान प्रिय
•भुजदंड = दंड के समान भुजा
•मृगलोचन = मृग के सामान लोचन
•कनकलता – कनक के समान लता
•घनश्याम – घन के समान श्याम (काला)
•विद्याधन – विद्या रूपी धन
•भवजल – भव रूपी जल
•आशालता आशा की लता
•नरसिंह नर रूपी सिंह
•प्राणप्रिय – प्राणों के समान प्रिय
•स्त्रीरत्न – स्त्री रूपी रत्न

LIVEWORKSHEETS

4. द्विगु समास-

जिस समस्त पद में पूर्व पद संख्यावाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे – पंजाब- पाँच **आबों** (नदियों) का समूह

त्रिफला	- तीन फलों का समाहार
चौराहा	- चार राहों का समूह
द्विगु	- दो गायों का समाहार
चवन्नी	- चार आनों का समाहार
अष्टाध्यायी	- आठ अध्यायों का समाहार
सप्तर्षि	- सात ऋषियों का समूह
नवग्रह	- नौ ग्रहों का समूह

LIVEWORKSHEETS